

728



१७ नमस्तस्मै महाकालिकाय ॥ या न या सा क्रमादी क
ला जाय मा लाजय की मध्यां न को ट बुद्धा विक गि
त व द ना वा नू न ग वि भ ला र संधा या वि द्र द्र वा ग लि
त कृ च यू ग नू उ मा ल वि रु की सा द वी द व द वी नि
उ व न ज न नी च रि का या उ यू आ न ॥ १ ॥ व द्वा स्वः
दा न का टि क वि ल न न ड य म उ ल य द्र आ न ४ कः

खा दे ला रु मा गे ४ सु ड मू न सि गि न ४ (गै ख नं गा रु
ये ४ धू र्णु न को ४ मू ना णं य म म दि ष म रु णु म् न
दा य या लो या या द्वा र्द य मा न ४ व ण य मू दि तः
या रे व व ४ का ल ना शा ॥ २ ॥ च र्व नी नु म्बि र्द र्ण य
क ट क ट का टा ण द संधा न मू र्ण कृ र्वा ण ध र म धि
क क रु क रु क रु हा र्ण मू र्ण कृ र्वा ण नि र्ण नृ य

ॐ मि

यमकाठमनूतिमुभिंतिमास्त्रयनीयायाद
श्रुतिकर्यजमममममाममानायमनी॥ ३
॥ टट्टट्टट्टसकटकट्सट्टधावघर्षिवहनी
सूंसूंसूंक्षानकावाठकटकिटरसायकर्मचदरी
मा।लालीमूछायमालालललललललललललला
यवार्वी कुर्वनीचकुमूममममममममममममम

की घूना ॥ ४ ॥ वामक (ॐ) मृगं कं यल ययानि
गर्तदक्षि (ॐ) सूर्यविम्बं क (ॐ) नक्षत्रं धारैवलं वि
कटजटा दूटक (कठुमाली) स्क (ॐ) कृत्वात्र (यः)
लुध्रजति कनयूतं वक्रक कयल शानं मरुवध
वयकी ममरु वक्रु रयिरु ददारु दकाली ॥ ५ ॥ रं
लायक कवणी गयूमय विलसत् कठिका कानक

कलुषं लोकं ते कनकं त्वाव वणिगलनात्मनः
पादगोपां । दिव्यासानामरुतयमतिजगदिदं
याजवाकर्षुषूना वद्धन्युद्धयुद्धध्वजविततकु
जासासिधुवित्तमव ॥ ७ ॥ संग्रामरुद्धयुद्ध
वृधिनदधनेऽमरुठानां गिवाणि मालावद्धमुः
द्विध्वजविततकुजात्वं मग्नयविष्टा दृष्टा हते

४ यरुते ४ पृथुजघनघनावद्धना (ग) द्यकाश्री
गुलासिचगहस्मामधूवृधिवसदा तामनराविः
माला ॥ १ ॥ दृष्टा नोद्धमस्वस्मिन् रुवविगतिजग
द्विसर्वकणध्वत् संभावस्याक कालनववृधिन
वसोसंभवधूममूत्त । कालीकायालिनीर्त्तवधायन
वताथगिनीथागमूत्त वकाभकीकुमावीमन

लरुयहनालंगिवाचमुमु॥ ८ ॥ ॥ ॥
श्रीकालिकाष्टकं सर्वदुःखं ॥ ॥ गुरुश्रीसिद्धिरव
लुसर्वदा ॥ ॥ नमः श्रीकालिका ॥
॥ नमः श्रीकालिकाय ॥ नमः कलिकाय ॥
काममूत्रनयवयव ॥ ययान्निवर्तवतस्य
विंगनोमयसत्ते ॥ दानाद्यादृष्टान्य

यं गु धतिनिमाव विनीसयाय मीसान
मनिदेख ॥ ध्यामिरेव नमः च नद्रास्येन
चतनतय मित्रस्य दारि ॥ वर्यायव
सनिवारया नरामो न सद्रू बाग्वत्मी
नस्याकया ॥

ॐ निर्यात्रं ॥ जर्घासुजल (गमधनं) ॥ ॐ ग (धमद
कंदं रुट् ॥ चन्दनाक्रयुषी नमः ॥ नाचमर्न ॥ ॐ कौ
कौ स्वाहा ॥ आत्मतत्वादि ३ ॥ सूर्याद्यं ॥ दानयुजा ॥
ॐ दानयवत्थानमः ॥ आत्मोसर्न ॥ ॐ कौ कौ कौ
आत्मोसनाय नमः ॥ ॥ वाम ॥ गुं मुनूस्थानमः
दक्र ॥ गंग (धमय नमः ॥ मध्य ॥ ॐ कौ कौ कौ गुच्छ
कालीयूदवनाय नमः ॥ गंधपूष्याकृत ॥ ॐ कौ रुट्

स्वाहा ॥ आधायवा^xमक्रिय ॥ जस्माय रुट् ॥ गानगुय
दिग्बंधनं ॥ हंस ॥ याधायाम ॥ यं १७ वं ४४ वं ३२ ॥
साहं ॥ याधयतिष्ठा ॥ ॐ कौ कौ ३ ॥ ॥ न्याम ॥ जस्य
जीगुच्छकालीयागमक्रनमस्तु ॥ सदागिदमृष
यनमः ॥ गिनस ॥ जगतीकृदसं नमः ॥ मूर्खा ॥ गुच्छ
कालीयवनाय नमः ॥ रुदय ॥ ॐ वीजाय नमः ॥ गुच्छ ॥
कौमकनमः ॥ यादया ॥ कौकीलकाय नमः ॥ सर्वी (ग ॥

धर्मार्थकामभाक्ता (थे ऊय विनिथाग ४॥ कृणां जलि ॥
 कनन्यास ४॥ स्वाहा जन्माय रुट् ॥ ॐ ॐ ॐ ॥ सिद्धि कना
 तिग ॥ ॐ ॐ ॐ ॐ ॥ ॐ ॐ ॐ ॐ ॥ नमः ४ क ॥ स्वाहा कन
 जन्माय रुट् ॥ नवदद्यादिन ॥ ॥ पूजा लुसोधनं ॥
 यं ३ वं ३ वं ३ ॥ धनमूडा वं ॥ जवगुं ० नं ॐ ॥ धनवृक्षा ॥
 विधि (थं) ॥ ॥ जलमवृक्षा ॥ ॐ नवगन्धगीगु ॥ ॐ नवसिद्ध
 वं ३ ॥ ॐ ॐ दमकगं ३ ॥ ॐ नवगन्धगीगु ॥ मूलं ३ ॥ गयां ३

नि ३ ॥ ॥ धीर्थसाधनं ॥ ॐ जलमवृक्षा दिखानन ४ ॥
 रुट् लंखनराय ॥ रुट् खालानदाय ३ ॥ ॐ जवगुं ० नं ॥
 धीर्थसाधनं ॥ नं वनस्वां ॥ ॐ ॐ ॐ ॐ ॥ ३ यजा ॥ ॐ ॐ
 गजिन्मृग २ ॐ मृगा रुट् ॐ मृग वधिनिमरायका
 सयुक् स्वाहा ॥ ३ ॥ मूलं ६ ॥ यानिमूडा ॥ तानपुयदिग
 वंधनं ॥ ॥ नवदद्या ॥ रुट् लंखनराय ॥ नमः ४ स्वां ॥
 साधन ॥ यं ३ वं ३ वं ३ ॥ वं धनमूडा नावगुयदिग वंधनः

न न ४ यागुस्मयनं ॥ जौ जाधवादि ॥ रुट् मविमले ॥
नं वक्रिमधुलाय २ ॥ रुट् यागुसत्र ॥ भुं सूर्य मधुला
य २ ॥ मूलं तीर्थथन ॥ मुद्धि न ॥ येन स्वांग ॥ उं भामम
धुलाय २ ॥ ऊयमूलं ३ वं धनू था निमूडा ॥ न वगुय
दिगर्वधनं ॥ ॥ गुनू न यध ॥ नं स्वाहा गी गुनू था
य्ययामि ॥ ३ ॥ ॥ दया सनं ॥ जाधवादि ॥
उं रुं न त्रिं हा सनाय २ ॥ उं रुं विं भगि मधुला सनाय २

उं रुं पंचय ना सनाय २ ॥ उं रुं मरु नि वा सनाय २
ध्यान ॥ नं नू द का धा दुरु स्मा पि तय सुवदनी कृष्णि
का द रु यी ना वा भवे धन ना रा व मु के न विधि ना
मधुमाला पि नगी ॥ द रु पे र ल्य व र्दे गृ लि घ न वि
दि तं मधु ख र्दं ग वा मं व ल य न क था लं ध न गि ठु र
क नी का सि का चिं न या मि ॥ ध्यान पू र्ण न म ४ ॥
आ वा रु ना दि या ध य ति ष्ठा ॥ पा द्या दि ॥ चं द ना दि

धूपदीप॥ नेत्र्यद्य नीर्थकाय॥ यंवगुप्तविय॥
दवनैर्घा॥ पुनरावसनं॥ श्या॥ ३॥
ॐ कौं कुं चैं कुं गी गु द्र का लि का ये नमः॥ थानि
वृग॥ वक्रयद्रासनं॥ कौं लि गु द्र म न नमः॥
वलि॥ ॥ नासयुजा॥ ॥ पश्चिम॥ ॥ उगुचंद
वसियुजा॥ ॐ कुं गु द्र का ली वलिं गृ द्र २ स्वरु॥
कौं शी र्वुं ग ध व द् क ल ग थानिनी ॥

सर्वोत्थावलिं मा गृ ह्या वलिं॥ चंदनादि
मूलसजाय १०॥ उग्ररुमयेन॥ मृगुय १०॥
दवनैर्घा॥ गुनु८ नैर्घा॥ जलिषका॥ प्रपन्न
नय॥ स्त्रीकाय॥ यथ॥ कि पू डि ता सि रु म स्व
मृगायेरुट् वलि विसरुनै॥ लादाय ३ रुट् ३
लथक॥ मीरानमृदानवलि द्वाय॥ स्नानका
याशनगुडावथमं कृ य॥ व्रीमानसविंदु लिका

आभा मरुक्मि
ASIA ARCHIVES

3018



हा वा कथय (थनि माला दूता ॥
 नैनि माल्ये वा सिन्धु नम धा व सिन्धु
 लैख नया डी भा सि य ३ ॥ सूर्य सा कि
 या ज का या व न प्ये ॥ ६० ॥ ॥



१ कूकूम, यथावन, उज्ज्वल
 गुरु, ध्वजगुदास्य, एतत्
 या नाम नरुन, डी कूया, ना
 मवाय, कलुस, कोखाय
 उरुधन धन्या विष्णुना, वा
 कस किं नवा दा कि न्यादि
 समस्त, इष्टना सगति



१ धयन्तु रुजयन्तु गुरुः
 गन्धनं वास्यं वाजा यजा
 लक्षा रुत यत लक्षाः
 दाकिनी यवण लक्षा ॥
 सिद्धिं तु नू आहू ॥ ॥

१ ॐ नमः श्रीगुरुभ्यः ॥ ॥ ॐ तानागिष्यन्ताता नवाति द्रुवस
 यक्षीकया लथी विन्दु नीमानकी सर्ववेनी जाय याता
 ल मलीरुकिं तु नूक गकि रू तामन्तु ॐ धनं उवाच
 ॥ धन ॥ ॥ ॐ वा निषी कचयि ख पुमाय दक्षा ग
 कृ लागिला मूरुगु आशकन् वा निषरुन वलिक
 लि कवद्रय रुन जा मा सिद्धि कालिका माता ॥ धन ॥

॥ ॐ श्रीगुरुभ्यो नमः ॥ रुद्राणि गुरुं रुद्रं स्वाहा ॥ ध
॥ ॐ श्रीसिन्दूरेश्वरी नमः ॥ नीलकोमारी वरु
यात्रीस्य भूम्हा ॥ कांक्षुं कौं स्वाहा ॥ धन ॥ ॥ ॐ
नादि साधिना तना आयि ॥ हाहा कना कनत आयि
धनान्क वेद्यना दन आयि ॥ गुरुं कुरुं कुरुं नादि कुरु
उषि कुरु ॥ विकुरु ॥ जहासुं नमनी ॥ सुने जहासु

नेमनी हाथय कुरु जहिक दौनि ॥ मूवाम नड थायि
वेथायि ॥ जाग जाग मयवीन ॥ रुद्रमन ॥ अष्टका
नीनाग कावृष रुद्रमन कन ॥ धन न विपसनाय ॥ ध
३ ॥ ॥ धनी लिता नत मनु ॥ ॐ वासुं कि दन कला ३
सि ॥ गुरुं जहालानासि ॥ सिद्धि रं वनासि ॥ रुं सिद्धि ॥
धन ३ ॥ धन न वृषता कुरु ॥ ॥ ॐ श्रीनमः ॥

ॐ नमः शिवाय ॥ मरुत्तमनीकुदनाय, दूँ रुद्र स्वाहा
 ॥ ॥ धमकुन, वाजयलयाडा, द्यालसक्रानानन
 य, धान ॥ हिदिय ॥ ॥ ॐ सिद्धि ॐ नमः शिवाय
 ॥ ॐ नमः आगीनीश्वरी ॥ ॐ ॐ ॐ ॐ सर्व, नमः
 नमः ॐ नमः ॥ ॥ धमकुन अकन (ग्वेड
 डा जयनयंकूर्य, धानज धमक वचयाय ॥ ॥

१ आ ओं नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ध्या ३ ॥ चि ॥
॥ उं कौं क्रीं कुं कों कूं ऊं ईं मूं रुं स्वाहा ॥ ॥
धमन नक्षत्र ३ अक्षर ग्वज्ज जय नयै कुलम
थद लखया यन तय ल्वक्रमाम शोक या स्य
सभिन कमन बाढा डी कुलन ल्वक्रमार्कन जि
उमा







१२४ अनालिच्छादुत्त
निर्यायत